मेहनत

आकाश कुमार
एन.आई.एच., रूड़की

बिन मेहनत के नहीं कोई, जीवन में आगे बढ़ पाते,
बढ़ा मुकद्दर से आगे, वो जीवन नही समझ पाते।।
जो मेहनत कर के जान से, ईमान की रोटी खाते।
बढ़ा सहारा इनका ले के, दुख जीवन में उनके कब आते।
बिन मुकद्दर से आगे, वो जीवन नहीं समझ पाते।।

मेहनत की सीढ़ी से चढ़कर, जो आगे बढ़ते जाते।
वो मस्तक है इस देश के, कभी नहीं झुक पाते।
दुख का घेरा, घोर अंधेरा, अपने आप हटाते।
वो कांटो पर घर बना कर, फूलों से उन्हें सजाते।
बिन मेहनत के नहीं कोई, जीवन में आगे बढ़ पाते,
बढ़ा मुकद्दर से आगे, वो जीवन नहीं समझ पाते।।

इस जीवन के पथ पर, अंगारों से जो डर जाते।
वो बढ़े नहीं आगे जीवन में, थम जाते और मर जाते।
इस भ्रश्ट पाप की दुनिया में, जो शोलों के तप सह जाते।
वो महकाते है, चमन देश का, खुशबू अपनी दे जाते।
बिन मेहनत के नहीं कोई, जीवन में आगे बढ़ पाते,
बढ़ा मुकद्दर से आगे, वो जीवन नहीं समझ पाते।।

वक्त के रहते, मेहनत करके, आगे जो बढ़ जाते।
मेहनत का बल्ब जलाकर, दुनिया को रोशन कर जाते।
जो मेहनत करें देश की खातिर, सब उस पर प्यार लुटाते।
लड़े देश के दुश्मन से वो, मर कर भी नाम कमा जाते।
बिन मेहनत के नहीं कोई, जीवन में आगे बढ़ पाते,
बढ़ा मुकद्दर से आगे, वो जीवन नहीं समझ पाते।।

मेहनत का नारा सैनी का, जग सारे में इसे सुनाते।
मेहनत से बढ़ने वालों को, ये अपने गले लगाते।
एक दिया मेहनत का नारा, सब मिल इसे निभाते।
अब मेहनत करके बढ़ने की, हम मिल कर कसमें खाते।
बिन मेहनत के नहीं कोई, जीवन में आगे बढ़ पाते,
बढ़ा मुकद्दर से आगे, वो जीवन नहीं समझ पाते।।

राष्ट्रीय व्यवहार में हिन्दी को काम में लाना देश की उन्नति के लिए आवश्यक है।